05.10.2020.

B.A. Part-II
Economics (Hons.)
Paper-II (Indian Economy)

Dr. Bipin Kumar
Prof. Incharge
R.R.S. College, Mokama
PPU, Patna.

Topic: "Cotton Industry"

Topic: Discuss present position, problems and suggestions of cotton industry in India.

स्वतंत्र हुए थे, इस क्षेत्र के बाद हमारे देश में सूती वस्त्र उद्योग सबसे बड़ा उद्योग रहा है, जहाँ कुशल एवं अकुशल दोनों प्रकार के श्रमिकों के लिए बड़ी मात्रा में रोजगार का सृजन करता है। यह उद्योग आज भी हमारे देश में रोजगार सृजन के मामले में दूसरे स्थान पर है। इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर आज भी लगभग साढ़े चार करोड़ लोगों को सीधे रोजगार मिला हुआ है। इस प्रकार से हमारे देश में 'सूती वस्त्र उद्योग' देश का सबसे बड़ा संगठित उपभोक्ता उद्योग है अतः संगठित उद्योगों में देश में इसका प्रथम स्थान है। विश्व में सूती एवं कपड़े के उत्पादन में भारत का तृतीय स्थान है तथा कपास के उपभोग में द्वितीय स्थान है। इस समय कपड़ा उद्योग हमारे देश के औद्योगिक उत्पादन में लगभग 14 प्र.श. का और सकल घरेलू उत्पाद में 4 प्र.श. का योगदान कर रहा है। देश के सकल निर्यात आय में इसका योगदान लगभग 16 प्र.श. है। इस उद्योग में साढ़े चार करोड़ (4.5 करोड़) लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध करवाती है तथा (6 करोड़) लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध करवाती है। यही कारण है कि किसी भी सरकार के लिए या हमारे देश के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्योग है। प्रो० बुकानन के अनुसार, "सूती वस्त्र उद्योग भारत के प्राचीन युग का गौरव है तथा भविष्य की आशा है। जिस समय में (प्राचीन) आजकल के उन्नत देशों में सभ्यता की शुरुआत भी नहीं हुई थी - उस समय भारत का सूती वस्त्र उद्योग अपनी कला, सुन्दरता एवं उपयोगिता के लिए काफी प्रसिद्ध था।"

हमारे देश में प्रथम सूती वस्त्र उद्योग कारखाना वर्ष 1818 में कोलकाता के पास घुसुरी नामक स्थान पर स्थापित किया गया था, लेकिन वह असफल रहा। इसके बाद वर्ष 1855 में दूसरा कारखाना मुम्बई में श्री कावसजी डाबर द्वारा स्थापित किया गया जिसने इस उद्योग की नींव रखी। इसके बाद मुम्बई में सूती वस्त्र कारखानों की संख्या में वृद्धि होने लगी। वर्ष 1857 के बाद अहमदाबाद में भी सूती वस्त्र कारखानों की स्थापना हुई। मुम्बई एवं अहमदाबाद के बाद यह उद्योग देश के कई स्थानों/राज्यों में यथा, नागपुर, शोलापुर, कानपुर, चेन्नई एवं इन्दौर में स्थापित किए जाने लगा। इस प्रकार, प्रथम महायुद्ध के शुरुआत में सूती वस्त्र उद्योगों की संख्या 264 हो गयी। बाद के समय में जापान एवं अमेरिका के प्रतियोगिता के कारण इस उद्योग को काफी हानि भी उठानी पड़ी। अतः 1930 में इसको संरक्षण भी प्रदान किया गया। पुनः द्वितीय विश्वयुद्ध के काल में इस उद्योग को विकास करने का पुनः महत्वपूर्ण अवसर मिला - लेकिन आजादी के बाद देश विभाजन के

इस उद्योग की इस गति को अधिक तीव्र बनाने का कारण विभाजन के समय सूती वस्त्र के कुल 394 मिलों में से 14 पाकिस्तान में चली गई तथा शेष 380 उद्योग भारत में रह गए। लेकिन कपास उत्पादन करने के 60 प्रतिशत क्षेत्र ही भारत के पास रहे। अतः कपास की भारी कमी ने उद्योग के विकास की गति को धीमा कर दिया। अब हम विभिन्न योजना काल (योजनाओं) में सूती वस्त्र उद्योग की चर्चा करेंगे।

हमारे देश में 'प्रथम योजना' से लेकर 'अब तक' सरकार विभिन्न योजनाओं में यह प्रयास किया गया है कि यह उद्योग देश की आन्तरिक मांग को पूरा करके, प्रति व्यक्ति कपड़े के उपभोग में वृद्धि तथा पर्याप्त मात्रा में निर्यात करने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हो पाया। देश में मिलों की संख्या बढ़ी है लेकिन इसके विपरीत प्रति व्यक्ति उपलब्धता कम हो गयी है। इस उद्योग की दशा को सुधारने के लिए राष्ट्रीय सूती वस्त्र निगम (National textile corporation) की भी स्थापना की गयी। वर्तमान समय में हमारे देश में 94 प्रतिशत उत्पादन हैण्डलूम एवं पावरलूम के माध्यम से हो रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि सरकार द्वारा हैण्डलूम एवं पावरलूम को अनेक सुविधाएं एवं रियायतें दी गई हैं। इस काल में मिलों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 1950-51 में यहाँ 383 मिलें थीं, जबकि वर्तमान में इनकी कुल संख्या 1,824 हो गयी है।

अब हम सूती उद्योग की वर्तमान स्थिति की चर्चा करेंगे। वर्तमान समय में, हमारे देश में कुल 1,824 मिलें हैं -- जिसमें से 192 मिलें सार्वजनिक क्षेत्र में, 153 मिलें निगम क्षेत्र में एवं शेष 1,479 निजी क्षेत्र में हैं। इन मिलों में कुल तकुओं (Saddles) की संख्या 332 लाख है तथा लगे हुए करघों (Looms) की संख्या 1.23 लाख है। 119 मिल राष्ट्रीय वस्त्र निगम के प्रबन्ध में हैं शेष मिलें निजी सहकारी क्षेत्र में हैं। इस उद्योग में 4.5 करोड़ लोग (450 लाख) व्यक्ति लगे हुए हैं। उद्योग में नियोजित पूंजी लगभग 6000 करोड़ रु० से अधिक की पूंजी लगी हुई है। इस उद्योग का वार्षिक उत्पादन 12,000 करोड़ रुपये कुल मूल्य का है।

अब हम इन उद्योगों के स्थानीयकरण की चर्चा करेंगे। हमारे देश में सूती वस्त्र उद्योग लगभग पूरे देश में फैला हुआ है लेकिन प्रारंभिक अवस्था में स्थानीयकरण एवं केन्द्रीयकरण महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्यों में ही अधिक था। इसके निम्नलिखित प्रमुख कारण थे:

OCTOBER 2020

09

SEPTEMBER . WEDNESDAY

253-113 . WK 37

Appointments

(i) सस्ते एवं कुशल श्रमिक : इस क्षेत्र में कम पारिश्रमिक वाले श्रमिकों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता होने के कारण था।

(ii) अनुकूल जलवायु : इस क्षेत्र की जलवायु समुद्री हवाओं के कारण आर्द्र होने के कारण सूती वस्त्र उद्योग के लिए अनुकूल थी।

(iii) विद्युत की उपलब्धता : इन क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में एवं सस्ती दरों पर विद्युत उपलब्ध था।

(iv) रेल कम्पनियों की भाड़ा नीति : उस समय रेल कम्पनियों की भाड़ा नीति विदेश व्यापार हेतु बन्दरगाहों के पास वाले स्टेशनों पर माल पहुँचाने एवं वहाँ से माल देश के भीतरी भागों में ले जाने के लिए कम भाड़ा लिया जाता था- जिसका विशेष लाभ उठाने के लिए उद्योग ज्यादातर मुम्बई एवं अहमदाबाद के आसपास लगे।

(v) बन्दरगाह पास होने के लाभ : यह क्षेत्र बन्दरगाहों के पास था अतः उद्योगों को मशीनों एवं उपकरणों तथा अन्य रासायनिक पदार्थों को आयात करने में सुविधा रहती थी।

(vi) उद्योगपतियों की खास योग्यता : शुरुआत में, इस उद्योग को महाराष्ट्र (मुम्बई) में स्थापित करने वाले पारसी एवं भाटिया जाति के व्यक्ति थे जो वहीं निवास करते थे। यह व्यक्ति कपास के आयात एवं निर्यात में काफी (विशेष) अनुभव रखते थे। अतः इन व्यक्तियों ने विदेशी व्यापारियों की सहायता से मुम्बई के आसपास क्षेत्रों में सूती मिलों की स्थापना की।

उपरोक्त के आधार पर आप यह भी [illegible] हालाँकि देश के आर्थिक विकास का योजनाबद्ध प्रभाव के कारण सूती वस्त्र उद्योग का विकेन्द्रीकरण हो गया है, लेकिन फिर भी यह उद्योग महाराष्ट्र, गुजरात एवं तमिलनाडु में बहुलता एवं आधिपत्य बरकरार है। अब हम इन उद्योगों की प्रमुख एवं वर्तमान समस्याओं की चर्चा करेंगे :

(i) कच्चे माल की समस्या : हमारे देश में सूती वस्त्र उद्योग के समक्ष पहली समस्या रुई और कपास से संबंधित है। कपास के मामले में आज भी हमारा देश स्वावलंबी नहीं हो पाया है। [illegible] उत्तम किस्म की कपास उत्पादन कम मात्रा में होता है। अतः हमें उत्तम किस्म की कपास को अमेरिका, मिस्र एवं सूडान आदि देशों से आयात करना पड़ता है।

(ii) ऊँची लागत एवं कम लाभ : हमारे देश में सूती वस्त्र उद्योग की दूसरी प्रमुख समस्या ऊँची लागत एवं कम लाभ की है। लागत के हिसाब से [illegible] मूल्यों में [illegible] वृद्धि एवं कम लाभ [illegible] हो रहा है। इसके साथ ही देश में लगातार [illegible] परिणामस्वरूप लागत अधिक एवं लाभ कम हो रहा है [illegible] बढ़ती जा रही है।

(iii) [illegible] मशीनों की [illegible] समस्या : सूती वस्त्र उद्योगों में मशीनों एवं यंत्रों [illegible] आधुनिकीकरण [illegible] इन उद्योगों की मशीनें काफी पुरानी एवं जर्जर [illegible] काफी पुरानी है। [illegible] उत्पादन व्यय बढ़ रहा है। इसके साथ ही उत्पादन कम एवं [illegible] उद्योग प्रगति भी [illegible]
[illegible]

OCTOBER NOVEMBER DECEMBER

उपभोक्ताओं में कृत्रिम रेशों की मांग काफी बढ़ रही है - क्योंकि पुरानी तकनीक के कारण प्रति मीटर कपड़े की कीमत ज्यादा पड़ती है। अतः आधुनिकीकरण एवं मशीनों का अभिनवीकरण अनिवार्य है।

④ ऊर्जा की समस्या : इस उद्योग को कोयला की कमी या [illegible] से नियमित बिजली आपूर्ति नहीं हो पाती है, इसका सीधा असर उद्योग के उत्पादन एवं उसके लागत पर पड़ता है।

⑤ श्रमिकों की समस्या : मजदूरों समय-समय पर वेतन, बोनस एवं भत्ते, तथा लाभ कम होने के कारण कठिनाई होती है। इन मांगों की पूर्ति हेतु मील मजदूर धरना, प्रदर्शन, हड़ताल एवं तालाबंदी कर देते हैं जो महीनों तक चलते हैं।

⑥ सरकारी कर का अत्यधिक भार (बोझ) : सरकार सरकारी वस्त्र उत्पादन पर लगातार उत्पाद-शुल्क बढ़ाती रही है। ऊँची उत्पाद शुल्क के कारण निर्मित कपड़े एवं सूत महंगे हो जाते हैं, जिससे आन्तरिक मांग एवं मीलों के लाभ में काफी कमी हो जाती है।

⑦ निर्यात की समस्या : सूती वस्त्र उद्योग के समक्ष निर्यात प्रोत्साहन की भी समस्या है। आज विश्व बाजार के निर्यात व्यापार में हमारे देश को [illegible], इटली, रूस, जापान जैसे आधुनिक देशों और सस्ते उत्पादों से प्रतियोगिता करना पड़ता है जिसमें हम पिछड़ जाते हैं।

⑧ बीमार मीलों की समस्या : देश में मिलों की बढ़ती हुई लागत, दोषपूर्ण एवं [illegible] कठिनाई के कारण ऐसी बीमार मीलों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। हानि के संभावना के कारण मील मालिक के द्वारा मीलों को बंद कर दिया जा रहा है और श्रमिक बेरोजगार होकर भुखमरी के कगार पर आ जाते हैं।

⑨ हस्तकरघा एवं मिल उद्योग में समन्वय की समस्या : हमारे देश में हस्तकरघा उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा सूती मील उद्योग पर कपड़े के मूल्य, डिजाइन, उत्पादन की मात्रा इत्यादि से संबंधित पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाये गये हैं। अतः मील मालिकों के अनुसार इस प्रकार के प्रतिबंध सूती मीलों के विकास में बाधक है।

अब हम उपरोक्त समस्याओं के समाधान का उपाय देखेंगे :

(i) अधिक कपास उत्पादन को बढ़ावा
(ii) आधुनिकीकरण, विवेकीकरण एवं नवीनीकरण
(iii) बीमार एवं जर्जर मीलों आर्थिक संरक्षण
(iv) पर्याप्त मात्रा में नियमित बिजली आपूर्ति
(v) सरकार को आसान दर पर कर भुगतान की सुविधा।
(vi) निर्यात प्रोत्साहन हेतु विशेष प्रयास
(vii) ऊँची दर से विनियोग एवं विकास में वृद्धि
(viii) नये मशीनीकरण एवं आधुनिकीकरण
(ix) शोध, शिक्षण एवं प्रशिक्षण की प्रोत्साहन
(x) श्रमिकों एवं मील मालिकों के बीच मधुर सम्बन्ध (स्वतन्त्र और [illegible])

उपरोक्त उपाय एवं समाधान के माध्यम से सूती एवं वस्त्र उद्योग को रोजगार, निर्यात एवं विदेशी मुद्रा आमदनी का स्रोत बन सकता है।